रिचर्ड ब्यर्ड

उत्तरी और दक्षिणी ध्रुवों का खोजी

रिचर्ड ब्यर्ड

उत्तरी और दक्षिणी ध्रुवों का खोजी

RICHARD E. BYRD
Atlantic Ocean
Pacific Ocean

डिक ब्यर्ड ने वर्जिनिया में जो पत्र पढ़ा वो बहुत दूर से आया था. जज एडम कारसन ने उसे फ़िलीपीन्स के पास स्थित एक दूर-दराज़ के द्वीप में आने का न्यौता दिया था.

"वो यहाँ से दस हज़ार मील दूर है," माँ ने कहा, "और तुम अभी सिर्फ बारह साल के हो."

पर डिक के माता-पिता ने डिक को वहां भेजने का निर्णय लिया. दोनों भाईयों ने डिक की तैयारी में मदद की.

"अब तुम एक अन्वेषक हो," बड़े भाई हेनरी ने कहा. "तुम हमेशा से एक अन्वेषक - खोजकर्ता बनना चाहते थे," छोटे भाई टॉम ने कहा.

1900 में इस प्रकार की यात्रा में हफ़्तों और महीनों लग जाते थे. पर डिक को पानी के जहाज़ के सफर में मज़ा आया. मनीला शहर में कुछ दिन बिताने में भी उसे आनंद आया.

फिर जल्द ही घर वापिस लौटने का समय आ गया.

डिक ने नक़्शे में देखा. उसने अपनी ऊँगली भारतीय महाद्वीप और सुएज कैनाल पर रखी. फिर उसने अपनी ऊँगली मेडिटरेनीयन समुद्र और अटलांटिक महासागर पर रखी.

"मैं लौटते समय इस रास्ते से जा सकता हूँ," उसने खुद से कहा. "फिर न्यू-यॉर्क पहुंचकर मैं वर्जिनिया के लिए ट्रेन ले सकता हूँ. इस प्रकार मैं पूरी दुनिया की परिक्रमा लगा पाऊंगा."

फिर उसने कूदकर अंकल जज को अपना आईडिया बताया.
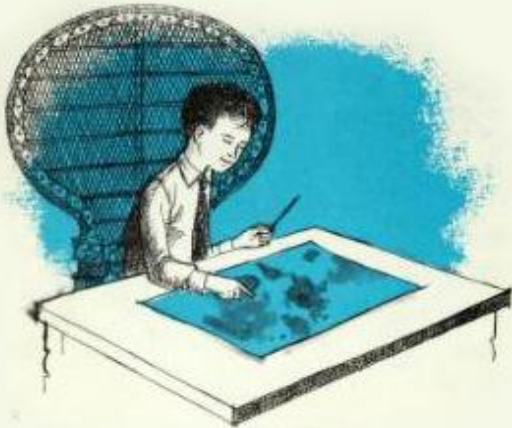
अंकल जज ने कुछ देर सोचा.

फिर उन्होंने कहा, "ठीक है, मैं तुम्हारे घर जाने का टिकट उसी हिसाब से कराऊंगा."

वर्जिनिया वापिस पहुँचने के बाद सब लोगों ने डिक का स्वागत किया. लोगों ने उसके साथ ऐसा व्यवहार किया जैसे डिक वाकई में एक मशहूर अन्वेषक बन चुका हो!

"दुनिया की खोजबीन करना बहुत अच्छी बात है," उसके पिता ने कहा. "पर उससे पहले तुम्हें अपनी पढ़ाई पूरी करनी चाहिए."

जब डिक स्कूल में था तब उसे फुटबॉल खेलने का बहुत शौक था. वो जब एनापोलिस की नौ-सेना अकादमी में पढ़ने गया तो वो वहां भी फुटबॉल टीम में था. एक मैच के दौरान डिक के एक पैर में गहरी चोट लगी. उसके बाद उसे काफी समय अस्पताल में रहना पड़ा.

बाद में उसने समुद्री नाविक बनने की ट्रेनिंग हासिल की. पर पैर ने उसे बहुत परेशान किया. इसलिए कुछ वर्षों के बाद उसे नौ-सेना छोड़नी पड़ी. उसके बाद नौ-सेना ने उसे वाशिंगटन डी.सी. में एक नौकरी दे दी.

1917 में अमरीका और जर्मनी के बीच युद्ध छिड़ा. युद्ध के समय डिक अपने देश की मदद करना चाहता था. उसके बारे में उसने अपनी युवा पत्नी मेरी से चर्चा की.

"पैर की चोट के कारण नौ-सेना मुझे जहाज़ पर नहीं लेगी. इसलिए मैं अब हवाई-जहाज़ चलाना सीखूंगा. क्योंकि हवाई-जहाज़ चलाने में पैरों की ज़रुरत नहीं पड़ती है!"

जल्द ही डिक अकेले हवाई-जहाज़ उड़ाने लगा. "हवाई-जहाज़ को पहली बार हवा में ऊपर उड़ाने का मज़ा ही कुछ अलग है," उसने मेरी से कहा.

डिक ने नौ-सेना के एक हवाई-जहाज़ पर, अटलांटिक महासागर पार करने की बात सोची.

किसी ने भी इस तरह की उड़ान पहले नहीं भरी थी. "उससे जर्मन सेना को भी कुछ सबक मिलेगा."

पर उसके बाद युद्ध समाप्त हुआ और डिक को दुबारा वाशिंगटन जाना पड़ा.
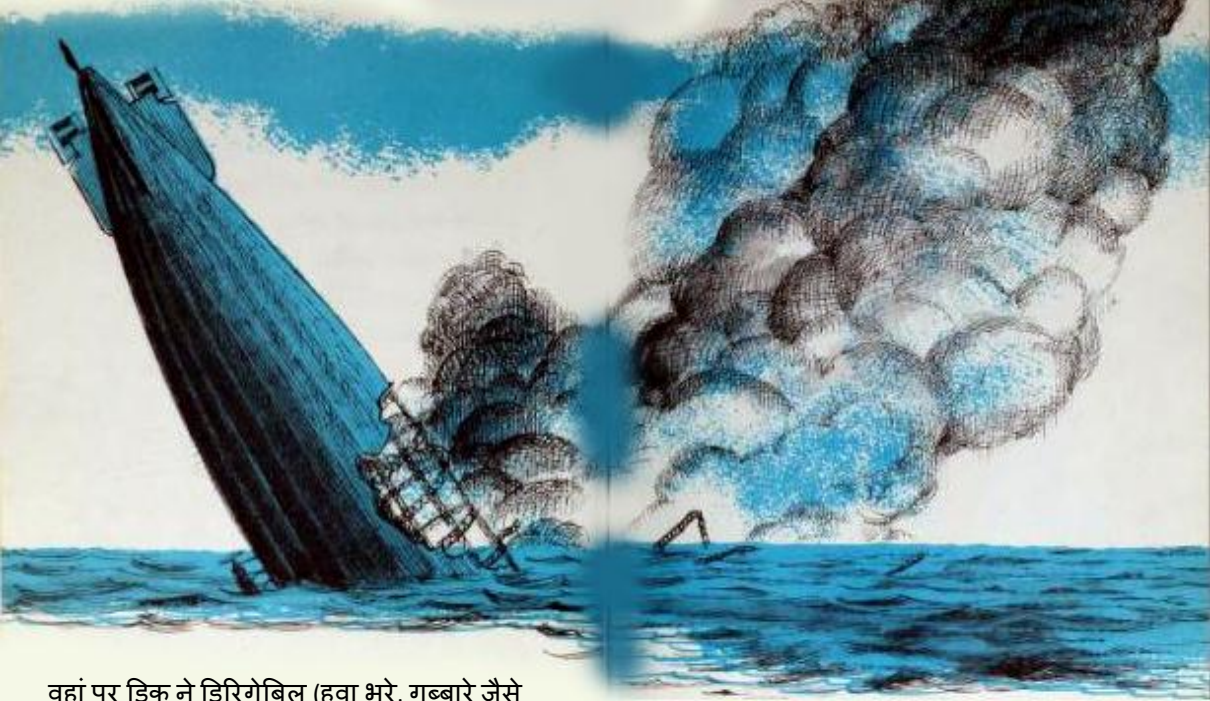
वहां पर डिक ने डिरिगेबिल (हवा भरे, गुब्बारे जैसे जहाज़) पर नौकरी की. डिरिगेबिल के चालक उस यान से अटलांटिक महासागर पार करना चाहते थे.

इत्तिफाक से डिक की ट्रेन कुछ लेट हुई और वो हवाई अड्डे पर दो मिनट देरी से पहुंचा. तब तक डिरिगेबिल यान उड़ान भर चुका था.

उसी दोपहर को डिक ने खबर सुनी, "वो डिरिगेबिल यान, समुद्र में डूब गया है और उसके चालक दल के सभी सदस्य मारे गए हैं."

"मेरी तकदीर अच्छी थी, पर उस हादसे से मैं बिल्कुल डरा नहीं हूँ," डिक ने मेरी से कहा. "हवाई-जहाज़ अवश्य अटलांटिक महासागर को पार कर सकते हैं. शायद मैं एक दिन वो करू."

पर कुछ समय के लिए डिक को अपना यह विचार त्यागना पड़ा.

उसने "उत्तरी ध्रुव" जाने की योजना बनाई. कुछ धनी लोगों ने इस अभियान के लिए आर्थिक सहायता दी. नौ-सेना ने इसके लिए डिक को कुछ हवाई-जहाज़ दिए.

25 जून 1925 को डिक दूर-दराज़ स्थित ग्रीनलैंड पहुंचा. इसके लिए उसके समुद्री जहाज़ को बड़ी विशाल हिमशिलाओं को तोड़ना पड़ा. पर जब तक जहाज़ ग्रीनलैंड पहुंचा तब तक गर्मी का मौसम लगभग ख़त्म हो चुका था.

डिक ने जल्दी-जल्दी बर्फीले उत्तरी ध्रुव के बारे में जो कुछ संभव था, वो सीखा. उसने बहुत से नोट्स और चार्ट बनाए और वहां के मौसम सम्बन्धी जानकारी इकट्ठी की. उड़ान के समय वहां सबसे उपयुक्त कपड़े और खाना क्या होगा? उसका भी उसने अध्ययन किया. उसने बर्फ पर हवाई-जहाज़ को उतारने का भी कई बार अभ्यास किया!

अगले साल डिक वहां वापिस गया. उसके साथ फ्लॉयड बेनेट भी था. वो नौ-सेना में डिक का पुराना मित्र था. फ्लॉयड, डिक का साथी-पायलट बना.

"हम दोनों उत्तरी-ध्रुव पर उड़ने वाले पहले इंसान बनेंगे!" डिक ने अपने मित्र से कहा.

फिर दोनों ने हाथ मिलाया.

उन्होंने बर्फ पर एक रन-वे बनाई. पर डिक को तब बहुत आश्चर्य हुआ जब वो उस रन-वे पर अपने हवाई-जहाज़ को हवा में नहीं उड़ा पाया. हवाई-जहाज़ के स्की (फिसलपट्टी), बर्फ में चिपककर फंस गई. तीन बार डिक ने हवाई-जहाज़ को उड़ाने की कोशिश की. पर तीनों बार वो उसमें असफल रहा. अंत में चौथी बार उन्हें सफलता मिली. यह अभ्यास बाद में उनके बहुत काम आया.
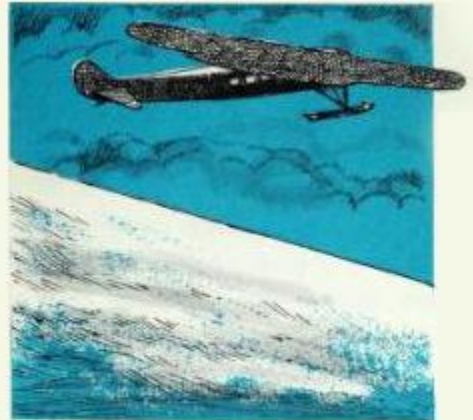
उसके एक हफ्ते बाद 9 मई को, मौसम अच्छा हुआ. डिक वो अवसर खोना नहीं चाहता था. उसने जोखिम उठाने की सोची. "अभी, या फिर कभी नहीं," उसने कहा, "या तो हम उत्तरी ध्रुव पर उड़ान भरेंगे, अन्यथा कहीं टकरा जायेंगे."

उसके बाद डिक और फ्लॉयड, हवाई-जहाज़ में चढ़े. वो रन-वे पर आगे बढ़े. "फुल स्पीड में आगे बढ़ो," डिक ने फ्लॉयड से कहा.

फिर हवाई-जहाज़ एक विशाल चील जैसे हवा में ऊपर उठा.

दोनों ठंड से कांपते पर्वतों के ऊपर उठे. पर इस समय वो नीचे स्थित बर्फीली पहाड़ियों की नोकों के बारे में नहीं सोच रहे थे. अगर वो गलती से उनमें से किसी को भी छूते तो उनका हवाई-जहाज़ चूर-चूर हो जाता.

कुछ देर बाद डिक ने हवाई-जहाज़ के कंट्रोल संभाले.

"देखो!" डिक अचानक चिल्लाया. उसने दाएं इंजन की ओर इशारा किया. वहां से तेल टपक रहा था.

वो अब क्या करें? क्या रूककर तेल का रिसना बंद करें? फिर हो सकता था कि वे दुबारा हवा में वापिस ही न उड़ सकें.

"वैसे भी नीचे इतनी ठंड में हम लोग ज़्यादा देर ज़िंदा नहीं बचेंगे," डिक ने कहा.

उसके बाद दोनों ने नीचे फैली बर्फ की सफेदी को देखा.

"हम लोग ऐसे ही उड़ते रहेंगे," डिक ने निर्णय लिया. कुछ ही देर में वे उत्तरी ध्रुव के ऊपर थे.

उत्तरी ध्रुव के ऊपर वो एक बड़े गोले में उड़े. उन्होंने उसके फोटो लिए और फिल्म भी बनाई.

"हम लोग इस समय दुनिया की चोटी पर हैं!" डिक ने फ्लॉयड से कहा.

उसके बाद डिक हवाई-जहाज़ को मोड़कर दुबारा ग्रीनलैंड ले आया. वहां उसने हवाई-जहाज़ की सुन्दर लैंडिंग की. बहुत देर तक सफ़ेद बर्फ को घूरते-घूरते दोनों का सर चकराने लगा था. दोनों, बहुत थक भी गए थे.
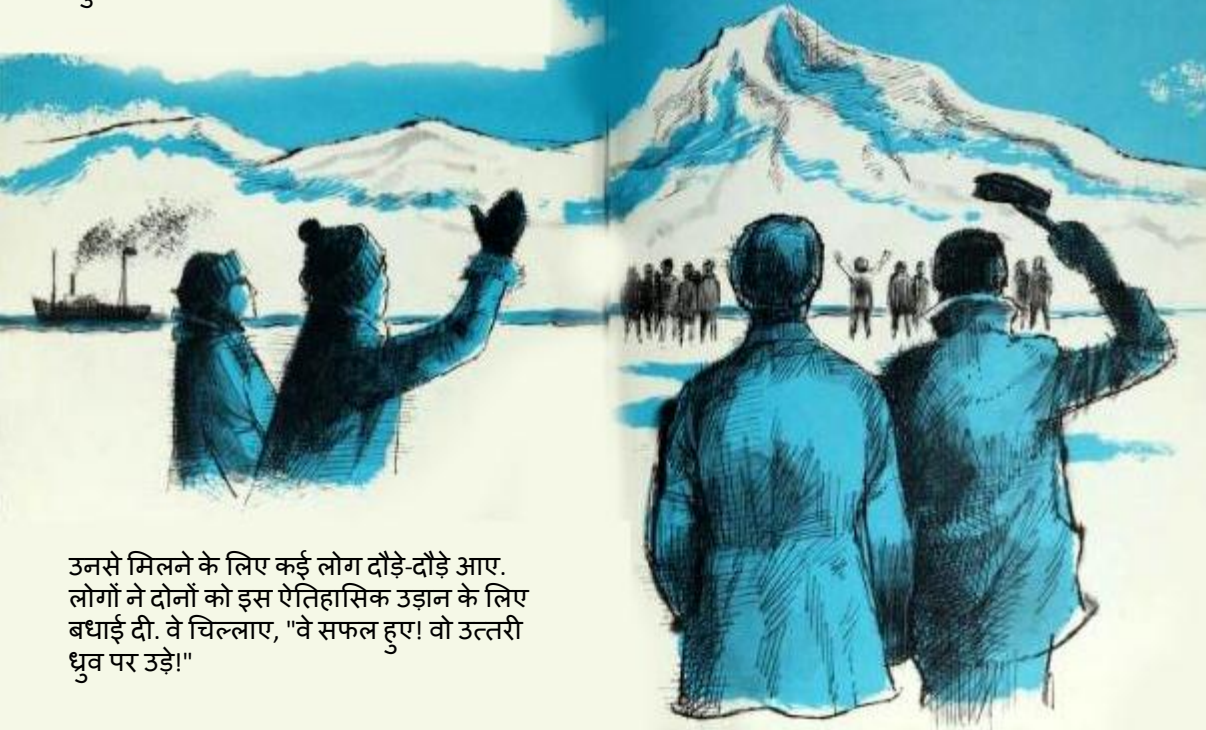
उनसे मिलने के लिए कई लोग दौड़े-दौड़े आए. लोगों ने दोनों को इस ऐतिहासिक उड़ान के लिए बधाई दी. वे चिल्लाए, "वे सफल हुए! वो उत्तरी ध्रुव पर उड़े!"
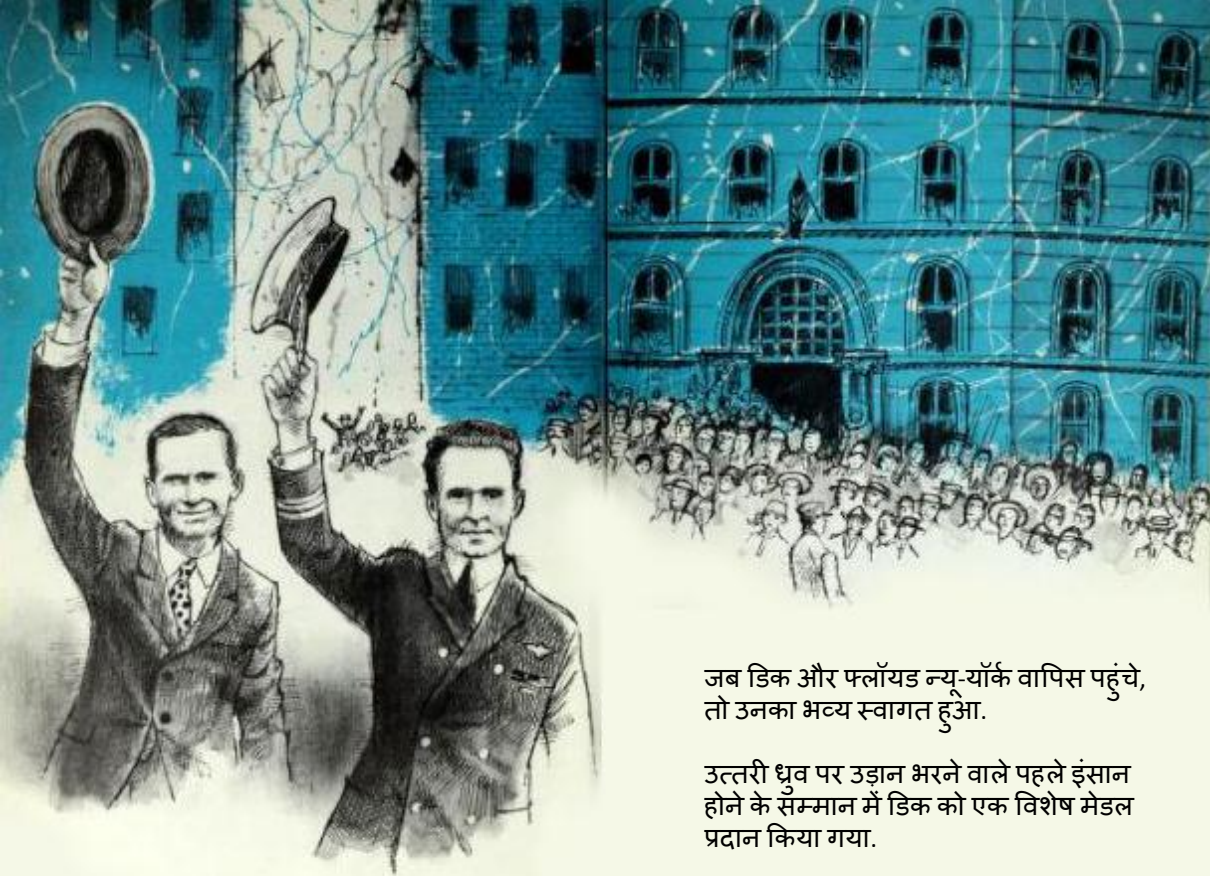
जब डिक और फ्लॉयड न्यू-यॉर्क वापिस पहुंचे, तो उनका भव्य स्वागत हुआ.

उत्तरी ध्रुव पर उड़ान भरने वाले पहले इंसान होने के सम्मान में डिक को एक विशेष मेडल प्रदान किया गया.

पर ब्यर्ड की खोजें तो अभी बस शुरू ही हुईं थीं. "अब मैं अटलांटिक महासागर पर उड़ान भरने की कोशिश करूंगा," उसने कहा.

उसके बाद ब्यर्ड और बेनेट उसकी योजना बनाने लगे. "मुझे पूरी उम्मीद है," ब्यर्ड ने कहा, "एक बड़े हवाई जहाज़ में हम अटलांटिक महासागर पार कर पाएंगे. इससे अमरीका के व्यापार में भी बढ़ौत्तरी होगी.

इसके लिए हम तीन इंजन वाले एक विशाल हवाई-जहाज़ का इस्तेमाल करेंगे. उसका नाम हम अमरीका रखेंगे."

"पर बड़े जहाज़ को उड़ान भरने के लिए एक बड़ी रन-वे की ज़रुरत पड़ेगी," बेनेट ने जोड़ा. "तभी जहाज़ टेक-ऑफ कर पायेगा."

कुछ समय बाद अभियान की तैयारी पूरी हुई. उस बड़े हवाई-जहाज़ ने लॉन्ग-आइलैंड की रूज़वेल्ट एयर-फील्ड से उड़ान भरी.

फिर पायलट ने अपना सर हिलाया. "इस हवाई-जहाज़ का अगला हिस्सा बहुत भारी है," उसने कहा.

टेक-ऑफ करते समय ही प्लेन टकरा गया! पायलट, सुरक्षित बाहर कूदा. पर ब्यर्ड का हाथ बुरी तरह मुड़ गया और बेनेट को भी काफी चोट लगी.

फिर उन्हें प्लेन का दुबारा निर्माण करना पड़ा.

पर इससे पहले प्लेन दुबारा बनकर तैयार होता, एक अन्य व्यक्ति ने सफलतापूर्वक अटलांटिक महासागर पर उड़ान भरी. चार्ल्स लिंडबर्ग एक छोटे से प्लेन में न्यू-यॉर्क से पेरिस तक उड़ा. ब्यर्ड ने उसे अमेरिका की रन-वे का उपयोग करने की इज़ाज़त दी.

जून 27, 1927 को ब्यर्ड ने एक बार अमेरिका को दुबारा उड़ान भरने का आदेश दिया. इस बार ब्यर्ड, तीन अन्य सदस्यों के साथ था. वो अपने साथ 800-पौंड डाक भी ले जा रहे थे. डाक को हवाई-जहाज़ द्वारा अटलांटिक के पार भेजने का वो पहला मौका था!

जल्द ही अमरीका को ख़राब मौसम का सामना करना पड़ा. कोहरा इतना सघन था कि प्लेन का सामने वाला हिस्सा तक नहीं दिख रहा था.

"हमें अंधे होकर ही उड़ना ज़ारी रखना होगा," उसने बाकी लोगों के लिए पढ़ने के लिए एक कागज़ पर लिखा.

वे घने कोहरे में 2000 मील तक उड़ते रहे. जब उन्होंने अटलांटिक महासागर पार किया तभी सूरज बाहर निकला. "वो रहा फ्रांस का तट!" ब्यर्ड चिल्लाया.

बाद में उन्हें और गहरे कोहरे का सामना करना पड़ा. साथ में रात का अँधेरा भी छाने लगा. घने कोहरे में फ्रेंच एयर-फील्ड की चमकीली रोशनियां भी नहीं दिखाई दीं.

ब्यर्ड को पता था कि वो अँधेरे में लैंड कर सकते थे. पर ऐसा करने से एयर-फील्ड पर अनजाने में किसी इंसान की मौत भी हो सकती थी. पर उनके जहाज़ में अब बहुत कम ईंधन ही बचा था.

तभी ब्यर्ड ने जल्दी से एक निर्णय लिया. "हम पीछे उड़कर पानी में लैंड करेंगे."

उनका जहाज़ एक धक्के के साथ पानी पर उतरा. झटके की वजह से दो लोग प्लेन से बाहर जाकर गिरे. एक किसी तरह खिड़की के बाहर निकला.

उन्होंने अँधेरे में पूछा, "तुम कहाँ हो डिक?"
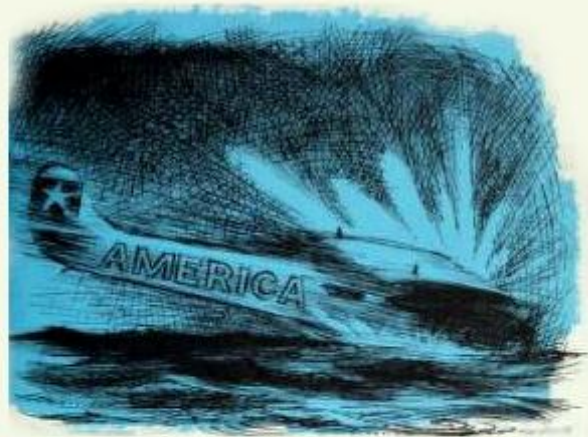
"मैं यहाँ हूँ!" डिक ने कहा. वो ध्वस्त प्लेन को पकड़े हुए था!

फिर चारों लोग एक रबड़ की बनी नाव में चढ़े और पतवार चलाते हुए तट तक पहुंचे.

"देखो! वहां एक लाइट-हाउस है," उनमें से एक आदमी ने कहा. लाइट-हाउस के रखवाले ने उन्हें पास के एक फार्महाउस पर भेजा. उन्होंने रात वहीँ गुज़ारी. सुबह होते ही वो वापिस अपने ध्वस्त हवाई-जहाज़ पर गए और वहां उन्होंने सावधानी से अमरीकी डाक को उतारा!

अगले दिन वे पेरिस गए. फ्रांस के लोगों ने ब्यर्ड और उसके लोगों का बहुत सम्मान किया. महीने भर पहले उन्होंने उसी तरह चार्ल्स लिंडबर्ग का स्वागत किया था.

जब ब्यर्ड न्यू-यॉर्क वापिस लौटा और उसका बहुत भव्य स्वागत हुआ. पर तब वो अपने नए अभियान के बारे में सोच रहा था. वो बहुत ही रोमांचक अभियान होने वाला था.

वो अब दक्षिणी ध्रुव के ऊपर उड़ान भरना चाहता था!

कई लोगों ने ब्यर्ड के इस नए अभियान में सहयोग दिया. कुछ ने धन दिया. नौ-सेना ने उसे उपकरण और जहाज़ दिए.

धन कमाने के लिए ब्यर्ड जगह-जगह लेक्चर देता था. उसने उद्योगपतियों से भी सहायता की अपील की. "अभियान का प्रचार-प्रसार आपके बिज़नेस के लिए अच्छा होगा," उसने फैक्ट्री मालिकों से कहा.
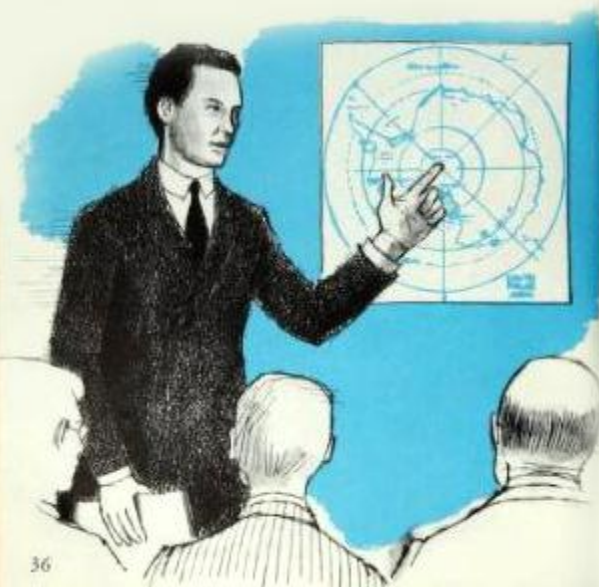
उसने इस अभियान के सदस्यों को बड़ी सावधानी से चुना.

ब्यर्ड के साथ अभियान में जाने वालों में पॉल सिपले था - वो एक स्काउट था और सिर्फ उन्नीस साल का था.

सबसे पहले उनका जहाज़ न्यूज़ीलैण्ड गया. उसके बाद जहाज़ बर्फ को तोड़ता हुआ अंटार्कटिका की ओर बढ़ा. एक बार तो लगा कि वो आगे ही नहीं बढ़ पाएंगे!

पर अंत में वे अंटार्कटिका पहुंचे. "देखो हमारा स्वागत करने वाली टीम यहाँ पहले से ही मौजूद है!" पॉल ने चिल्लाते हुए कहा. फिर उसने पेंगुइन्स की ओर इशारा किया. वहाँ दस हज़ार पेंगुइन्स का झुण्ड था. उनके काले कोट बर्फ की सफेदी में चमक रहे थे. पेंगुइन्स, अभियान दल को घूर रही थीं.

"पेंगुइन्स देखने में बिल्कुल जोकर जैसी दिखती हैं," पॉल ने कहा.

"उन तीन पेंगुइन्स को देखो जो कि बर्फ के ढाल पर फिसल रही हैं."

"पेंगुइन कैसे जीवित रहती हैं? तुम उसका अध्ययन करो," ब्यर्ड ने पॉल से कहा. "तुम उनकी बढ़ौत्तरी का रिकॉर्ड रखो. साथ में नन्हीं बेबी सील का भी अध्ययन करो. पर अभी हमें और काम करना है."

उसके बाद अभियान दल ने अपनी सप्लाई और सामान को कुत्तों से खींचने वाली फिसल गाड़ियों (स्लेज) पर लादा. उन्होंने अपने कैंप के लिए एक उपयुक्त जगह भी ढूंढी.

पहले उन्होंने टेंट लगाए, फिर घर बनाए. बाद में उन्होंने घरों के बीच में सुरंग बनाईं.

उनका कैंप, रॉस आइस शेल्फ पर एक 20 मील लम्बे खुले स्थान पर था. वहां पर बर्फ की दीवार 100 फ़ीट ऊंची थी. यानि वो दस मंज़िली इमारत जितनी ऊंची थी! बर्फ की यह दीवार अंटार्कटिका की कगार पर थी.
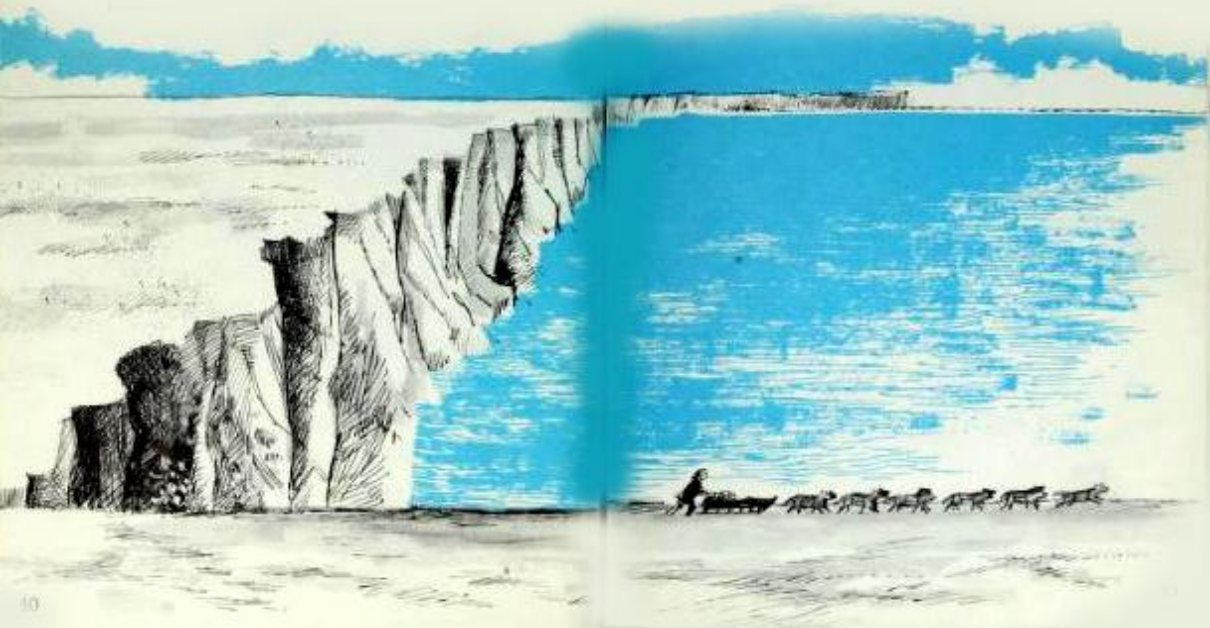
"हम अपने कैंप को लिटिल अमेरिका बुलाएँगे," ब्यर्ड ने कहा.

वो रात पूरे चार महीने तक कायम रही!

अक्सर तापमान शून्य से बहुत नीचे होता था.

"यह दुनिया का सबसे ठंडा स्थान है और वहाँ सबसे तेज़ हवाएं चलती हैं," अभियान दल के एक सदस्य ने कहा.

"और सबसे विरल भी," दूसरे से जोड़ा.

"अंटार्कटिका का क्षेत्रफल ऑस्ट्रेलिया से भी बड़ा है, पर वहां कोई इंसान नहीं रहता है," तीसरे ने कहा. "उसके अधिकतर इलाके की कभी खोज भी नहीं हुई है."

"वही खोज करने के लिए तो हम यहाँ आएं हैं," ब्यर्ड ने कहा.

वहां उन्होंने वाइट-आउट के बारे में सीखा : आसमान नीचे की सफ़ेद बर्फ को प्रीतिबिम्बित करता था, इसलिए वहां कोई परछाईं नहीं दिखती थी. वहां पर आसमान और ज़मीन के बीच की क्षितिज रेखा भी गायब थी. "ऐसा लगता था जैसे लोग न जाने कहीं बीच में खड़े हों," उनमें से एक ने कहा.
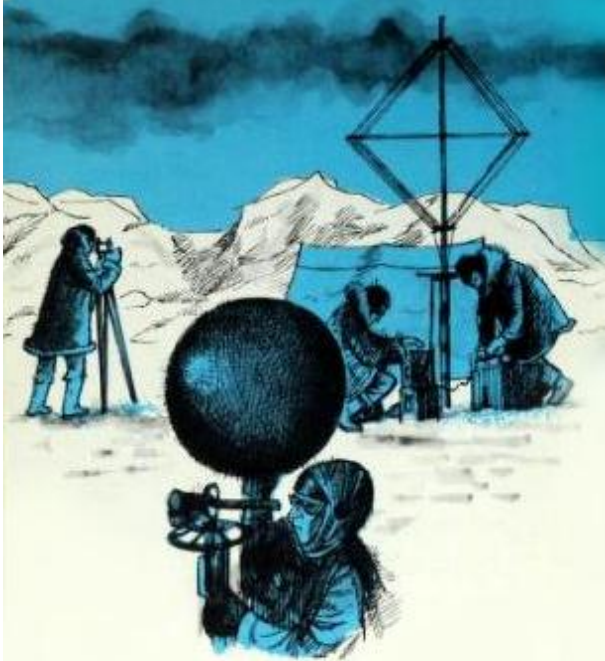
फिर सर्दी का मौसम ख़त्म हुआ. उसके बाद गर्मी का मौसम शुरू हुआ. तब सूरज दिन में कभी अस्त ही नहीं होता था. गर्मियों में भी तापमान शून्य से नीचे ही रहता था.

ब्यर्ड और उसके दल के सदस्य हमेशा व्यस्त रहते थे. वे तारों का निरीक्षण करते थे, तापमान और मौसम का रिकॉर्ड रखते थे. वो हवा में गैस के गुब्बारे छोड़कर हवा के बहाव का परीक्षण करते थे. वे नक़्शे बनाते, जो भविष्य में अन्वेषकों के काम आते.

पूरे समय ब्यर्ड, दक्षिणी ध्रुव पर उड़ान की योजना बना रहा था. उससे पहले कोई भी इंसान वहां नहीं गया था.

फिर ब्यर्ड, तीन अन्य लोगों के साथ दक्षिणी ध्रुव पर जाने को तैयार हुआ.

दल के सदस्यों ने बाकी लोगों से हाथ मिलाए. उसके बाद चारों हवाई-जहाज़ में चढ़े.
यह घटना 28 नवंबर, 1929 की है.

ब्यर्ड ने आदेश दिया. "भोजन को बाहर फेंको!“

फिर 125-पौंड भारी खाने के एक बोरे को प्लेन से बाहर फेंका गया.

कुछ देर बाद उन्हें इसी तरह एक और बोरा बाहर फेंकना पड़ा.

उन्होंने 9000 फ़ीट ऊंचाई पर उड़ान भरी. पर तब उन्हें समझ में आया कि उनका प्लेन बहुत भारी था! वो नीचे क्या फेंकें - ईंधन या भोजन?

हल्का होने के बाद प्लेन ऊंचाई चढ़ सका. अब उन्होंने पर्वत की एक चोटी पार की.

"हम चोटी के कुछ इंच ऊपर ही थे," ब्यर्ड ने एक कागज़ के पन्ने पर लिखा.

फिर ज़ोर का तूफ़ान आया!
दल के एक सदस्य ने लिखा, "अब हम ध्रुव से केवल 30 मिनट दूर हैं!"

ब्यर्ड ने उत्तर में लिखा, "चलो, हम वहां पहुँचने की ज़रूर कोशिश करेंगे."

उड़ान ज़ारी रही. कुछ देर बाद वे दक्षिणी ध्रुव के ऊपर थे. एक बार फिर से उन्होंने प्लेन की खिड़की खोली. इस बार उन्होंने अमरीकी झंडे को दक्षिणी ध्रुव के ऊपर फेंका!

"हमें यात्रा करते सिर्फ अट्ठारह घंटे ही हुए हैं," दल के एक सदस्य ने कहा. वे अब अपने कैंप लिटिल अमेरिका के बिल्कुल पास थे.

प्लेन, स्की पर फिसलता हुआ बर्फ पर लैंड किया.

कैंप के बाकी सदस्य अपने घरों से निकलकर भागे. उन्होंने ब्यर्ड और दल के अन्य सदस्यों को अपने कन्धों पर उठाया.

बाद में ब्यर्ड ने अंटार्कटिका के बहुत बड़े इलाके का नक्शा बनाया. "इस स्थान का नाम मेरी ब्यर्ड लैंड होगा," उसने कहा. वो अपनी पत्नी मेरी और चारों बच्चों - तीन बेटियों और एक बेटे के बारे में सोच रहा था. वे सभी अमरीका में थे. ब्यर्ड उनसे दो साल नहीं मिल पाया.

जल्द ही उनका अभियान समाप्त हुआ और घर लौटने का समय आया. ब्यर्ड ने लिटिल अमेरिका में लगे अमरीकी झंडे को सलूट किया और फिर उसे उतारा.

कुत्तों की फिसलने वाली गाड़ियां उनके सामान को वापिस जहाज़ तक लेकर गईं.

सदस्य दल में कुल 41 लोग थे. वे सभी खुश थे. जहाज़ में चढ़ने के बाद सभी हँसे.

"चलो अब वापिस जाकर हम टब में बैठकर गर्मागर्म पानी से नहाएंगे," उनमें से एक ने कहा.

"हमनें एक साथ मौत का सामना किया, पर अब हम साथ-साथ घर लौट रहे हैं," दूसरे ने कहा.

"दक्षिणी ध्रुव का अभियान बहुत सफल रहा," ब्यर्ड ने कहा. "आप सभी साथियों का बहुत-बहुत शुक्रिया."

वापिस लौटते वक्त ब्यर्ड ने दक्षिणी ध्रुव पर अपने दूसरे अभियान की योजना बनाई.

न्यूज़ीलैण्ड का हरा तट देखकर दल के सभी सदस्य चिल्लाए. "हमें पेड़ देखे कितने साल बीत गए हैं," उनमें से एक ने कहा. "अब मुझे पेड़ बहुत अजीब से लग रहे हैं."

फिर उन्हें संगीत की धुनें सुनाई दीं. बंदरगाह पर बैंड उनके स्वागत में एक धुन बजा रहा था. लोगों ने उनका बहुत जोश के साथ स्वागत किया. लोगों ने झंडे और बैनर फहराए.

ब्यर्ड ने रेडियो के ज़रिये पूरी दुनिया से बातचीत की. उसने सब को पर उड़ान के अपने अनुभव सुनाए.

वाशिंगटन वापिस लौटने पर ब्यर्ड को रियर एडमिरल के पद से सम्मानित किया गया.
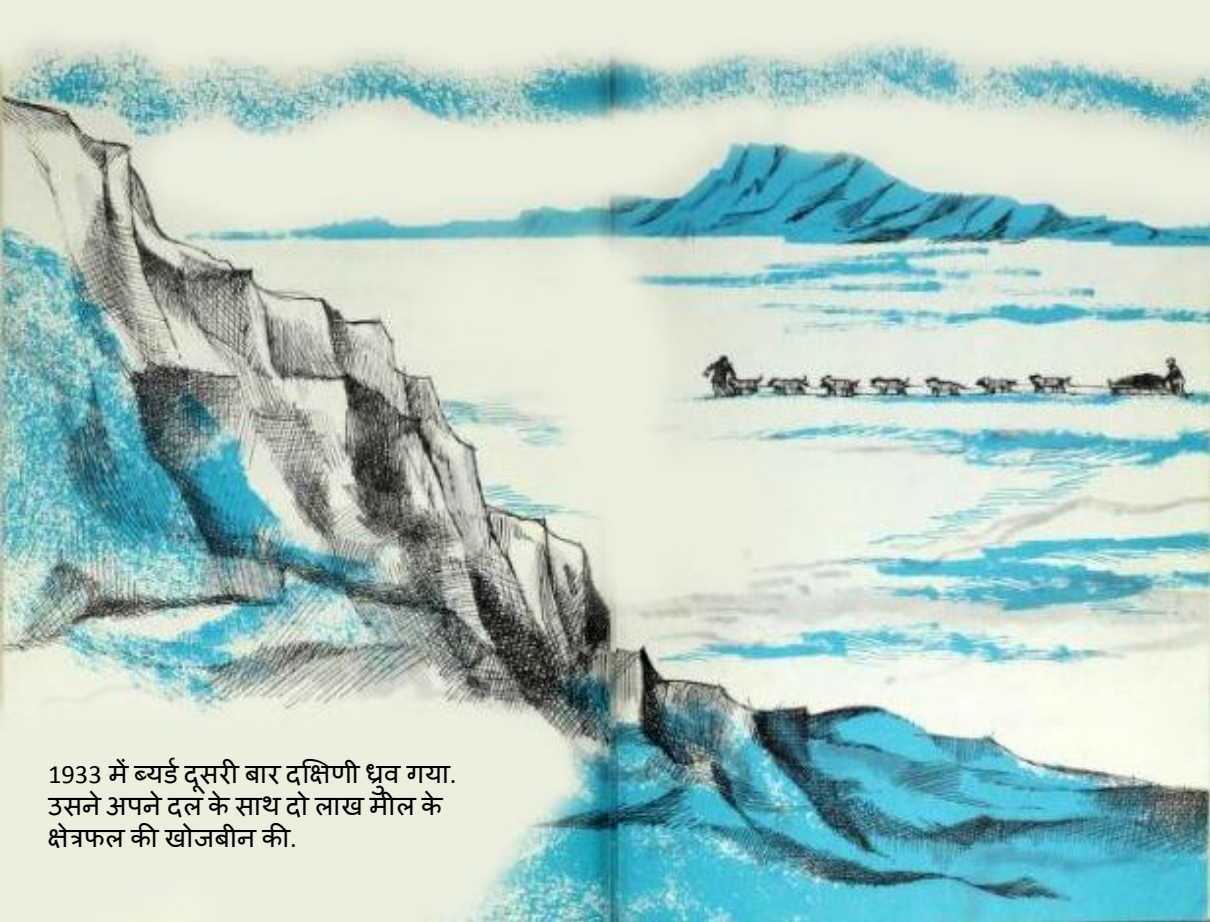
1933 में ब्यर्ड दूसरी बार दक्षिणी ध्रुव गया. उसने अपने दल के साथ दो लाख मील के क्षेत्रफल की खोजबीन की.

उन्होंने चार साल पहले अभियान में छोड़े भोजन को खाया. खाना जमा था पर खाने योग्य था. उन्हें बस उसे गर्म करना पड़ा.

"खाना एकदम बढ़िया है," लोगों ने एक-दूसरे से कहा.

बाद में ब्यर्ड ने अपने लोगों से कहा, "मैं यहाँ के मौसम के बारे में विस्तृत जानकारी इकट्ठी करना चाहता हूँ. उसके लिए मैं कैंप से 120-मील दूर जाकर कुछ दिन अकेला रहूंगा."

ब्यर्ड उस एकांत में अकेला रहा. उसके सब तरफ सिर्फ सफ़ेद बर्फ और आसमान था. वो दिन भर व्यस्त रहता था. वो रोज़ लम्बी दूरी तक टहलने जाता था. फिर वो मौसम सम्बन्धी रिकॉर्ड लिखता था. उससे पूरी दुनिया को दक्षिणी ध्रुव के मौसम के बारे में जानकारी मिली.

एक दिन रात को उसके स्टोव ने काम करना बंद कर दिया. फिर गैस के रिसाव से उसकी तबियत खराब हो गई.

अंत में कैंप से उसके साथी उसकी मदद के लिए आये और उसे लिटिल अमेरिका वापिस ले गए. "मैं अभी भी ज़िंदा हूँ!" उसने खुद से कहा. सच में वो एक अचरज करने योग्य बात थी. वो अनेकों मुश्किलों और जोखिमों से गुज़रा था, और अभी भी जीवित था.
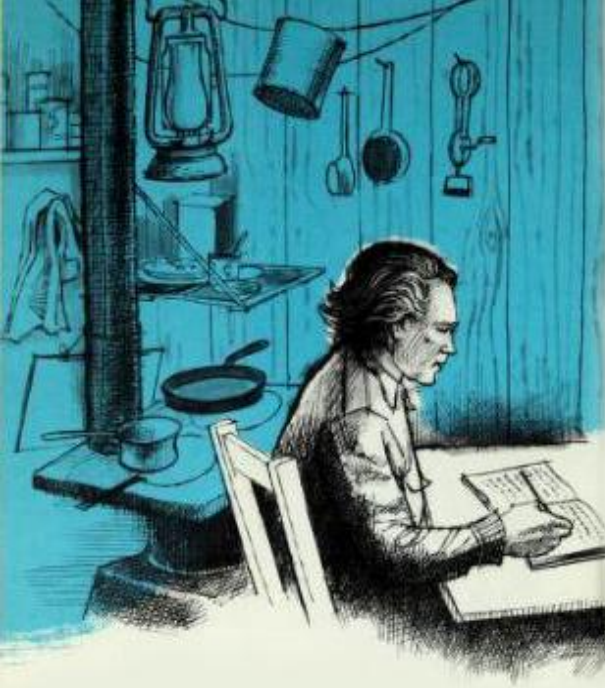
वो नियमित रूप से रोज़ अपनी डायरी में नई-नई जानकारी दर्ज़ करता था. वो पेंगुइन का अध्ययन करता था. रेडियो की मदद से वो रोज़ाना लिटिल अमेरिका में, अपने साथियों से बातचीत करता था.

बाद में ब्यर्ड, अंटार्कटिका तीन बार और गया. हरेक अभियान पहले की अपेक्षा बड़ा था. उसका अंतिम अभियान 1956 में था.

उसने अंटार्कटिका के लगभग साढ़े चार लाख वर्ग मील क्षेत्रफल की खोज की. वहां अब अमरीका के पास उससे भी ज़्यादा ज़मीन है. ब्यर्ड ने कई नई पर्वतमालाएं भी खोजीं.

"अंटार्कटिका की खोज लगभग पश्चिम जीतने जैसे थी!" ब्यर्ड के दिमाग में यह विचार कई बार आया.

एक बार वसंत में ब्यर्ड अपने बोस्टन के घर में आराम कर रहा था. उस दिन बहुत तेज़ हवा चल रही थी. ब्यर्ड को वो बहुत पसंद थी. पर उसे घर में ही रहना अच्छा लगा. वो अब बहुत थका भी था.

ब्यर्ड ने अपने सभी अभियानों के बारे में सोचा. "मैं घर पर ही आराम करूंगा," ब्यर्ड ने मेरी से कहा. वो अपने ऊंचे बेटे और तीनों बेटियों को देखकर मुस्कुराया.

उस दिन शाम को उसका देहांत हो गया.
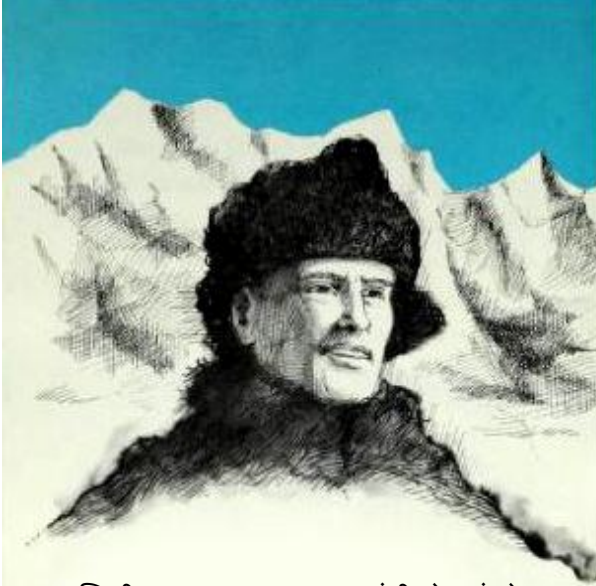
दक्षिणी ध्रुव पर जब यह खबर पहुंची तो वहां लोग बहुत दुखी हुए. उन्होंने ब्यर्ड के सम्मान में वहां झंडा आधा झुकाया.

पूरी दुनिया में लोगों ने ब्यर्ड की मृत्यु का शोक मनाया.

"ब्यर्ड एक महान खोजी था," लोगों ने एक-दूसरे से कहा. "उसने बर्फीले इलाकों को दुनिया के आम लोगों के लिए खोला."

समाप्त